

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 20 — वर्षा और शरद

5 October 2026



गोवर्धन पर घिरे गरजते मेघों के नीचे कृष्ण बलराम और व्रज के गोधन के साथ विचरते हैं, और जिसे देखने वाली दृष्टि हो, उसके लिए हर गिरती बूँद और नाचता मयूर भी प्रभु की ही शिक्षा बन जाता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध के इस बीसवें अध्याय में शुकदेव गोस्वामी राजा परीक्षित की दृष्टि के सम्मुख दो समूचे ऋतुओं को बीतने देते हैं — भिगीती वर्षा और उसके बाद आने वाली स्वच्छ शरद — जबकि कृष्ण और बलराम गोधन और ग्वालबालों के साथ वृन्दावन में विचरते रहते हैं।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 20 (विंश अध्याय)

- अध्याय शीर्षक: व्रज में वर्षा ऋतु और शरद ऋतु
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: वृन्दावन का वन और व्रज के चारागाह, वर्षा ऋतु और उसके पश्चात् आने वाली शरद ऋतु के दौरान
- केंद्रीय विषय: वृन्दावन में वर्षा और शरद का आगमन, जहाँ प्रत्येक प्राकृतिक चिह्न भक्ति, वैराग्य और प्रभु की महिमा की शिक्षा बन जाता है, जबकि कृष्ण और बलराम दोनों ऋतुओं में गोधन का पालन करते हैं
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 20, श्लोक 1-49
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण संस्करण)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

अध्याय 19 में सोते ग्वालों को फिर एक दावाग्नि ने घेरा, और कृष्ण ने पहले की भाँति उसे पी लिया; उन्हीं दिनों बलराम को उठा ले जाने का प्रयास करने वाले दैत्य प्रलम्ब का भी बलराम के हाथों अन्त हुआ। यह अध्याय इन्हीं दोनों उद्धारों पर विस्मित ग्वालबालों से आरम्भ होता है, जब वर्षा का आगमन होता है।

व्रजवासी दावाग्नि और प्रलम्ब के वध की कथा सुनाते हैं

श्री शुकदेवजी ने फिर कहना आरम्भ किया: विस्मय से भरे ग्वालबालों ने घर लौटकर व्रज की स्त्रियों को दावाग्नि से हुए उद्धार और प्रलम्ब के वध की कथा पूरे विस्तार से सुनाई। यह सुनकर वृद्ध गोप और गोपियाँ यही मान बैठीं कि कृष्ण और बलराम कोई साधारण बालक नहीं, अपितु दो महान् देवता हैं जो बड़े सौभाग्य से व्रज में उतर आए हैं।

श्रीशुक उवाच

तयोस्तदद्भुतं कर्म दावाग्नेर्मोक्षमात्मनः ।

गोपाः स्त्रीभ्यः समाचख्युः प्रलम्बवधमेव च ॥ १ ॥

śrī-śuka uvāca tayos tad adbhutam karma dāvāgner mokṣam ātmanaḥ gopāḥ strībhyaḥ samācakhyuḥ pralamba-vadham eva ca

अर्थ: श्री शुकदेवजी ने कहा: ग्वालबालों ने अपनी स्त्रियों को दोनों भाइयों के उस अद्भुत कर्म की पूरी कथा सुनाई — दावाग्नि से अपने उद्धार की, और प्रलम्ब के वध की। (स्कन्ध 10, अध्याय 20, श्लोक 1)

व्रज पर मेघ छाते हैं

फिर वर्षा ऋतु का आगमन हुआ — प्रत्येक प्राणी का पोषण करती, सूर्य और चन्द्र के चारों ओर चमकीले मण्डलों से सुशोभित, और गर्जन से प्रतिध्वनित। घने, विद्युत-युक्त मेघों ने आकाशीय ज्योतियों को ढक लिया, और आवृत आकाश उस शुद्ध आत्मा के समान जान पड़ा जिसकी बुद्धि तीन गुणों के खेल से आच्छादित हो जाती है। सूर्य, जिसने आठ मासों तक पृथ्वी का जल खींच रखा था, अब उसे वर्षा के रूप में लौटाने लगे जैसे धर्मात्मा राजा प्रजा को उसका उचित धन लौटाता है; और विशाल मेघ अपना जीवनदायी जल उसी प्रकार बरसाते रहे जैसे करुणाशील व्यक्ति दूसरों का दुःख हरने के लिए अपनी शक्ति बहा देते हैं। ग्रीष्म से सिकुड़ी पृथ्वी वर्षा से फिर हरी-भरी हो उठी, जैसे तपस्या का फल मिलने पर शरीर पूर्ण हो उठता है।

यहाँ शुक्रदेवजी एक गूढ़ शिक्षा देते हैं। रात्रि के प्रारम्भ में, घने अन्धकार में, केवल जुगनू ही चमकते हैं, छिपे हुए ग्रह नहीं; उसी प्रकार, पाप से भरे कलियुग में, मिथ्या मतवाद ही कोलाहल से फैलते हैं, जबकि वेद उन्हें देखने की इच्छा न रखने वालों के लिए अदृश्य ही रह जाते हैं।

निशामुखेषु खद्योतास्तमसा भान्ति न ग्रहाः ।

यथा पापेन पाषण्डा न हि वेदाः कलौ युगे ॥ ८ ॥

niśā-mukheṣu khadyotās tamasā bhānti na grahāḥ yathā pāpena pāṣaṇḍā na hi vedāḥ kalau yuge

अर्थ: रात्रि के प्रारम्भ में, अन्धकार के आवरण में, जुगनू ही चमकते हैं, ग्रह नहीं; इसी तरह कलियुग में, पाप से भरकर, मिथ्या मतवाद फैलते हैं, वेद नहीं। (स्कन्ध 10, अध्याय 20, श्लोक 8)

लम्बे समय से मौन में ढक मेघों की गर्जना सुनते ही दर्शने लगे, जैसे गुरु के बुलाने पर शिष्य मौन तोड़कर स्वाध्याय में लग जाता है; और क्षीण हो रहे झरने अचानक उफन उठे, जैसे संयम टूटते ही अनियंत्रित व्यक्ति का धन-बल गलत दिशा में बहने लगता है।



व्रज पर वर्षा ऋतु का आगमन होता है — गरजते मेघ और सूर्य-चन्द्र के चारों ओर चमकीले मण्डल, और सूर्य ग्रीष्म में खींचा जल लौटाने लगते हैं (श्लोक 3-9)।

वर्षा में पृथ्वी का हर्ष

पृथ्वी ने युद्ध के लिए सजी सेना के से रंग धारण कर लिए — नई दूब से हरी, लाल कीड़ों से रक्तिम, और कुकुरमुत्तों से यहाँ-वहाँ श्वेत। खड़ी फसलों ने बोने वाले किसानों को प्रसन्न किया, जबकि धनवानों को यह समृद्धि व्यथित कर गई, जो यह न जान सके कि समृद्धि विधाता के ही हाथ में है। जल और स्थल के सभी प्राणियों ने भी नए वर्षाजल से एक नया तेजस्वी सौन्दर्य धारण किया — जैसे, शुकदेवजी कहते हैं, आत्मा श्रीहरि की सेवा से सौन्दर्य प्राप्त करती है।

जलस्थलौकसः सर्वे नववारिनिषेवया ।

अबिभ्रन् रुचिरं रूपं यथा हरिनिषेवया ॥ १३ ॥

jala-sthalaaukasaḥ sarve nava-vāri-niṣevayā abibhṛan ruciraṁ rūpaṁ yathā hari-niṣevayā

अर्थ: जल और स्थल के सभी प्राणियों ने नए वर्षाजल के सेवन से एक नया सौन्दर्य धारण किया — जैसे कोई श्रीहरि की उपासना से सौन्दर्य प्राप्त करता है। (स्कन्ध 10, अध्याय 20, श्लोक 13)

समुद्र, नदियों के मिलने से उफनकर क्षुब्ध हो उठा, जैसे अस्थिर मन इन्द्रिय-विषयों से स्पर्श होकर विचलित होता है; किन्तु पर्वत, निरन्तर वर्षा से आहत होकर भी कभी नहीं काँपे — जैसे प्रभु में स्थिर हृदय किसी विपत्ति से विचलित नहीं होता।

गिरयो वर्षधाराभिर्हन्यमाना न विव्यथुः ।

अभिभूयमाना व्यसनैर्यथाधोक्षजचेतसः ॥ १५ ॥

girayo varṣa-dhārābhir hanyamānā na vivyathuḥ abhibhūyamānā vyaśanair yathādhokṣajacetasaḥ

अर्थ: पर्वत, वर्षा की धाराओं से बार-बार आहत होकर भी नहीं काँपे — जैसे परब्रह्म में स्थिर मन वाले विपत्तियों से अभिभूत होकर भी विचलित नहीं होते। (स्कन्ध 10, अध्याय 20, श्लोक 15)

अनदेखे मार्ग घास से ढककर अस्पष्ट हो गए, जैसे वेदों का सच्चा अर्थ उन ब्राह्मणों के बीच धुँधला पड़ जाता है जो स्वाध्याय छोड़ देते हैं।

वर्षा के अन्य आश्चर्य

शुकदेवजी कुछ और चिह्न संक्षेप में गिनाते हैं: चपला विद्युत किसी एक मेघ के प्रति स्थिर नहीं रहती, जैसे चंचल स्त्री किसी एक सच्चरित्र पुरुष के प्रति स्थिर नहीं रहती; अपने ही उधार प्रकाश से चमकते मेघों के पीछे छिपा चन्द्रमा दिखाई नहीं देता, जैसे अहंकार की चमक के पीछे आत्मतत्त्व अदृश्य रह जाता है; और पहले मेघों को देखते ही मयूर हर्ष से नाच उठते हैं, जैसे उनके हृदय में कृष्ण-भक्त के आने पर उल्लास उमड़ पड़ता है। मुरझाए वृक्ष फिर पत्तों-फलों से भर उठते हैं, जैसे तपस्वी तपस्या का फल मिलने पर बलवान हो जाते हैं; और जैसे कलियुग में मिथ्या मतों से वेदोक्त धर्म के बाँध टूटते हैं, वैसे ही इन्द्र की वर्षा से बाँध-दर-बाँध टूटते गए, जबकि मेघ सभी प्राणियों पर अमृत-सम जल बरसाते रहे, जैसे विद्वानों के मार्गदर्शन में राजा प्रजा की इच्छित वस्तुएँ प्रदान करते हैं।



कृष्ण और बलराम गोधन को वर्षा से भीगे वृन्दावन वन में गहरे ले जाते हैं, किसी गुफा या वृक्ष-कोटर में शरण लेकर ग्वालबालों सहित सादा भोजन करते हैं (श्लोक 25-31)।

वर्षा से भीगे वन में कृष्ण-बलराम की लीला

इस सब के बीच, गौओं और ग्वालबालों से घिरे और बलराम के साथ, कृष्ण उस पके खजूरों और जामुनों से भरे वन में क्रीड़ा के लिए गहरे उतर गए। उनकी पुकार सुनकर गौएँ, जो अपने दूध-भरे थनों के भार से मन्द गति से चल रही थीं, स्नेह से थन से दूध बहाती हुई तेज़ी से उनकी ओर दौड़ीं। भीगे वन में विचरते हुए प्रभु ने वनवासियों के हर्ष और वृक्षों से झरते मधु को देखा; और जब वर्षा चारों ओर घेर लेती, तब वे अपने साथियों के साथ किसी वृक्ष-कोटर या गुफा में शरण लेकर जंगली फल-मूल पर सन्तुष्ट रहते, और बलराम तथा ग्वालबालों सहित किसी शिला पर, जल के निकट, सादा भोजन करते। गौओं-बछड़ों को मेदिनी पर सन्तुष्ट बैठे, आधे बन्द नेत्रों से जुगाली करते देखकर, कृष्ण ने उस वर्षा-शोभा का हर्ष सहित स्वागत किया।

वृन्दावन में शरद ऋतु का आगमन

इस प्रकार कृष्ण और बलराम व्रज में उन मासों को बिताते रहे; और फिर शरद पूर्णतः आई — निर्मेघ, स्वच्छ जल और शीतल, कोमल वायु सहित। सर्वत्र कमल खिल उठे, और जल ने अपनी पुरानी पारदर्शिता फिर से पा ली, जैसे योग से भटके मन की स्पष्टता अभ्यास पुनः आरम्भ करते ही लौट आती है। यहाँ शुकदेवजी इस समूचे अध्याय की सबसे स्पष्ट शिक्षा देते हैं: जैसे शरद आकाश के मेघों को, प्राणियों की भीड़भाड़ को, पृथ्वी के कीचड़ को और जल की मलिनता को हर लेती है, वैसे ही कृष्ण के प्रति भक्ति किसी भी आश्रम में रहने वाले व्यक्ति से हर अशुभता को हर लेती है।

व्योम्नोऽब्ध्रं भूतशाबल्यं भुवः पङ्कमपां मलम् ।

शरज्जहाराश्रमिणां कृष्णे भक्तिर्यथाशुभम् ॥ ३४ ॥

vyomno 'bbhram bhūta-sābalyaṁ bhuvaḥ paṅkam apāṁ malam śaraj jahārāśramiṇāṁ kṛṣṇe bhaktir yathāśubham

अर्थ: जैसे शरद ने आकाश के मेघों, प्राणियों की भीड़भाड़, पृथ्वी के कीचड़ और जल की मलिनता को हर लिया, वैसे ही कृष्ण के प्रति भक्ति आश्रमवासियों से सारी अशुभता को हर लेती है। (स्कन्ध 10, अध्याय 20, श्लोक 34)

शरद के कुछ और चिह्न इस चित्र को पूर्ण करते हैं: जल त्याग चुके मेघ श्वेत-स्वच्छ चमकते हैं, जैसे कामना-मुक्त तपस्वी; पर्वत कहीं शुद्धतम जल बहाते हैं, कहीं रोक लेते हैं, जैसे विद्वान अपना ज्ञान उचित समय पर ही योग्य जनों को देते हैं; और वर्षा में क्षुब्ध रहा समुद्र शरद में शान्त हो जाता है, जैसे वह साधक जिसका मन अन्ततः विश्राम पा लेता है।



शरद निर्मेघ और शान्त आती है, कमल खिल उठते हैं और जल अपनी पुरानी पारदर्शिता पा लेता है, जैसे योग से भटका मन अभ्यास से फिर स्पष्ट हो जाता है (श्लोक 32-33)।

शरद की चन्द्रमा और चमकती रात्रि

किसानों ने दृढ़ बाँधों से अपने खेतों से बहते जल को रोक लिया, जैसे योगी अपनी अनियंत्रित इन्द्रियों से रिसती हुई बुद्धि को सुरक्षित रखते हैं। चन्द्रमा स्वयं उठा और शरद के सूर्य-किरणों से उत्पन्न सन्तापों को हर लिया — जैसे सच्चे ज्ञान का उदय देहाभिमान से उत्पन्न दुःख को समाप्त करता है, और जैसे अकेले कृष्ण ही ब्रज की गोपियों की उन व्यथित हृदयों को शान्ति दे सकते थे, जो अब केवल उनके अपने वियोग से दुःखी थीं।

शरदर्काशुजांस्तापान् भूतानामुदुपोऽहरत् ।

देहाभिमानजं बोधो मुकुन्दो ब्रजयोषिताम् ॥ ४२ ॥

śarad-arkāṁśu-jāṁś tāpān bhūtānām uḍupo 'harat dehābhimāna-jam bodho mukundo vraja-yoṣitām

अर्थ: जैसे चन्द्रमा ने शरद-सूर्य की किरणों से सभी प्राणियों के सन्ताप को हर लिया, वैसे ही सच्चे ज्ञान का उदय देहाभिमान से उत्पन्न दुःख को हर लेता है — और वैसे ही मुकुन्द ने अकेले ही ब्रज की गोपियों के वियोग-दुःख को हर लिया। (स्कन्ध 10, अध्याय 20, श्लोक 42)

निर्मेघ आकाश रात्रि में अपने तारों की चमक से और भी सुन्दर दिखने लगा, जैसे सत्त्वगुण-प्रधान मन शास्त्रों के सच्चे अर्थ से चमकता है; और उस आकाश में पूर्ण, अखण्ड चन्द्र-मण्डल अपने तारागणों के बीच ऐसा शोभित हुआ जैसे इस पृथ्वी पर यदुओं के स्वामी कृष्ण वृष्णियों के समूह से घिरे शोभित हुए।

अखण्डमण्डलो व्योम्नि रराजोदुगणैः शशी ।

यथा यदुपतिः कृष्णो वृष्णिचक्रावृतो भुवि ॥ ४४ ॥

akhaṇḍa-maṇḍalo vyomni rarājoḍu-gaṇaiḥ śaśī yathā yadu-patiḥ kṛṣṇo vṛṣṇi-cakrāvṛto bhuvi

अर्थ: अखण्ड चन्द्र-मण्डल आकाश में अपने तारागणों से घिरा शोभित हुआ, जैसे यदुपति कृष्ण इस पृथ्वी पर वृष्णियों के समूह से घिरे शोभित हुए। (स्कन्ध 10, अध्याय 20, श्लोक 44)



अखण्ड शरद-चन्द्र तारागणों के बीच शोभित होता है, जैसे यदुपति कृष्ण पृथ्वी पर वृष्णियों के समूह से घिरे शोभित होते हैं (श्लोक 44)।

फूलों से भरे वनों से शीतल वायु बहने लगी तो सभी ने ग्रीष्म की शेष जलन भुला दी — सिवाय ब्रज की उन गोपियों के, जिनके हृदय केवल कृष्ण ने बाँध लिए थे, और जिनके लिए वही कोमल वायु उनके दिन के वियोग की पीड़ा और गहरा कर गई। पशु-पक्षी और स्त्रियाँ अपने संगियों द्वारा खोजी जाकर इस ऋतु में गर्भ धारण करने लगीं, जैसे प्रभु को अर्पित कर्म अपने समय पर फल देते हैं; और सूर्योदय होते ही कुमुदिनी के अतिरिक्त जल के सभी फूल खिल उठे, जैसे धर्मात्मा राजा के शासन में चोर के अतिरिक्त सब निर्भय रहते हैं।

शरद की पूर्णता

पकी फसलों से भरी पृथ्वी प्रथम अन्न से किए यज्ञों, गाँव-गाँव के उत्सवों, और सबसे बढ़कर कृष्ण-बलराम की उपस्थिति से शोभित हुई। वर्षा समाप्त होते ही वर्षा से रुके व्यापारी, मुनि, राजा और विद्यार्थी निकल पड़े और अपने गन्तव्य तक पहुँचे — जैसे योग-सिद्ध आत्मा शरीर से मुक्त होकर अपनी चिरवांछित अवस्था प्राप्त करती है।

वणिङ्मुनिनृपस्नाता निर्गम्यार्थान् प्रपेदिरे ।

वर्षरुद्धा यथा सिद्धाः स्वपिण्डान् काल आगते ॥ ४९ ॥

vaṇiṇi-muni-nṛpa-snātā nirgamyārthān prapedire varṣa-ruddhā yathā siddhāḥ sva-piṇḍān kālā āgate

अर्थ: वर्षा से रुके व्यापारी, मुनि, राजा और विद्यार्थी अब निकलकर अपने इच्छित लक्ष्यों तक पहुँचे — जैसे अपने समय तक रुकी हुई सिद्ध आत्माएँ उचित क्षण आने पर अपनी सच्ची अवस्था को प्राप्त करती हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 20, श्लोक 49)

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. सारी सृष्टि गुरु बन सकती है। गर्जन, मेंढक, जुगनू, पर्वत और चन्द्रज्योति — सब कुछ जीवन्त शिक्षा बन जाते हैं (श्लोक 4–24, 33–47)। प्रभु की इस सृष्टि में, भक्ति की दृष्टि रखने वाले के लिए, कुछ भी इतना छोटा नहीं कि उसमें उनकी शिक्षा न हो।
2. कृष्ण के प्रति भक्ति वह शुद्ध करती है जो कुछ और नहीं कर सकता। इस अध्याय की सबसे स्पष्ट शिक्षा शरद द्वारा मेघ और कीचड़ के हरण की तुलना सीधे हृदय में भक्ति के कार्य से करती है (श्लोक 34): जैसे शरद आकाश, पृथ्वी और जल को शुद्ध छोड़ती है, वैसे ही कृष्ण के प्रति प्रेमपूर्ण सेवा किसी भी मार्ग पर चलने वाली आत्मा की सारी मलिनता को धो देती है। यही वह कुंजी है जो शुकदेवजी हमें इस अध्याय की बाकी हर बात पढ़ने के लिए सौंपते हैं — हर वर्षा और हर शान्त पर्वत अन्ततः भक्ति की इस शुद्ध करने वाली शक्ति की ओर ही संकेत करता है।
3. प्रभु की सेवा आत्मा को उसका सच्चा सौन्दर्य देती है। जैसे प्रत्येक प्राणी ने वर्षा से नया तेज पाया, वैसे ही श्रीहरि की उपासना से आत्मा वह सौन्दर्य पाती है जो कोई बाहरी श्रृंगार नहीं दे सकता (श्लोक 13)।
4. प्रभु में स्थिर हृदय कभी विचलित नहीं होता। निरन्तर आहत पर्वत नहीं काँपते, वैसे ही प्रभु में टिका मन विपत्ति चाहे जैसी हो, नहीं डगमगाता (श्लोक 15)।
5. प्रभु की दूरी भी भक्तों की सेवा करती है। चन्द्रमा वह ताप हरता है जिसे उसने उत्पन्न नहीं किया, और कृष्ण अकेले ही वह पीड़ा हरते हैं जो उनके वियोग से उत्पन्न हुई (श्लोक 42) — प्रभु के वियोग का उपचार केवल प्रभु में ही मिलता है।

एक भक्तिमय चिन्तन

शुकदेवजी द्वारा कृष्ण की महान कथा को एक मात्र वर्षा ऋतु की गति तक धीमा करते देखना बड़ा ही कोमल अनुभव है। यहाँ कोई दैत्य नहीं मारा जाता, कोई सर्प वश में नहीं किया जाता — फिर भी हर गिरती बूँद और हर शान्त पर्वत आत्मा और प्रभु की ही बात कहने लगता है। ऐसा लगता है जैसे ऋषि परीक्षित को, और हमें भी, यह सिखाना चाहते हैं कि संसार चुपचाप यही बातें सदा कहता रहता है, और भक्ति केवल वही है जो हमें अन्ततः इसे सुनने योग्य बनाती है। वह वर्षा जो पहले सब कुछ अन्धकारमय कर देती है, और फिर शरद जो उसे शान्त कर देती है, मानो समर्पण करते हृदय की ही गति है — पहले विरह का प्रवाह, और फिर कृष्ण की कृपा से वह चन्द्र-आलोकित स्पष्टता जो शेष रह जाती है।

एक दैनिक भाक्ते-अभ्यास

आज प्रकृति का कोई सामान्य दृश्य — एक मेघ, गिरती वर्षा, शान्त जल पर चन्द्रिमा — एक क्षण के लिए अपना गुरु बनने दें, जैसे वर्षा-शरद ने परीक्षित को शिक्षा दी। बस यह सोचें कि यह आत्मा और प्रभु की बात कह रहा होता तो क्या कहता, और इतनी सहजता से शिक्षाएँ रखने के लिए कृष्ण को मन में मौन धन्यवाद दें। धीरे से यह जप करते हुए आरम्भ करें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

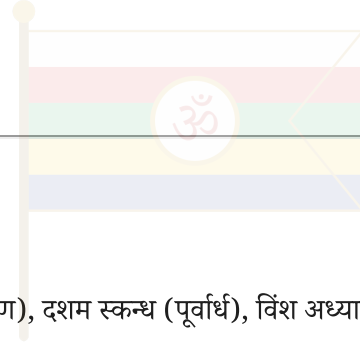
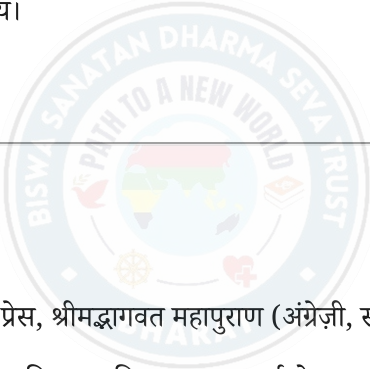
उपसंहार

दशम स्कन्ध के इस बीसवें अध्याय में शुकदेवजी व्रज पर दो ऋतुएँ बीतने देते हैं — वह वर्षा जो आकाश को अन्धकारमय करती है, और वह शरद जो उसे फिर शान्त करती है — और इस पूरे काल में कृष्ण-बलराम स्वयं अपने गोधन के बीच रहकर इन्हें देखते और उनमें विचरते रहते हैं। मेघ, मेंढक, पर्वत और चन्द्रिमा में ऋषि एक शान्त शिक्षा पाते हैं, और सबको इस एक सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा के नीचे समेट देते हैं: कृष्ण के प्रति भक्ति हृदय को वैसे ही शुद्ध करती है जैसे शरद संसार को शुद्ध करती है। जब हमारे अपने आकाश पर वर्षा का अन्धकार छाए, तब हम भी यह विश्वास रखें कि बाद में आने वाली स्वच्छता कृष्ण की ओर मुड़ने वाले हर हृदय के लिए उनका अपना वचन है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।



संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण संस्करण), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), विंश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-20-rainy-season-and-autumn-in-vrindavana-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञानम् • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

